ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 131-135**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

भारतीय पुनर्जागरण के राष्ट्रवादी स्वर और महामना मालवीय का पर्यावरणीय दृष्टिकोण

कृति तिवारी
(NET JRF), शोध अध्येत्री, देलही स्कूल ऑफ इकोनामिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

Received-25.01.2026, Revised-01.02.2026, Accepted-08.02.2026 **E-mail: kritigeobhu@gmail.com**

सारांशः ***प्रत्येक महापुरुष विचारक अपने समय की ऐतिहासिक परिस्थितियों के पर्यावरण में उत्पन्न होता है, और उन्हीं परिस्थितियों में अपना योगदान देता है। मालवीय जी के कार्यकाल में भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन और सामाजिक पुनर्जागरण का प्रादुर्भाव हो रहा था। यद्यपि इसे सामाजिक की संज्ञा देना कठिन है, अपितु पुनर्जागरण और समाज सुधारों को लेकर उस काल के भारतीय सामाजिक संरचना में परिवर्तन के स्रोत फूट निकले थे। पुनर्जागरण की निम्नलिखित मूल प्रवृत्तियाँ महामना जी के कार्यकाल में उभर रही थीं –***

1. ***परम्परागत भारतीय संस्थाओं की कुरीतियों से विद्रोह और उनमें सुधार का संगठित प्रयास। (दयानन्द सरस्वती आदि)***
2. ***भारतीय संस्कृति और परम्परा के आधुनिकीकरण का प्रयास (महामना मालवीय आदि)।***
3. ***राजनीतिक क्षेत्र में राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संस्थाओं का संगठन का विकास एवं उपयोग। (म० गाँधी, बोस, तिलक आदि)***

कुंजीभूत शब्द– भारतीय पुनर्जागरण, राष्ट्रवादी स्वर, ऐतिहासिक परिस्थिति,योगदान, भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन, सामाजिक संरचना।

इन प्रवृत्तियों के बीच महामना ने पुनर्जागरण में अपना समुचित योगदान सुनिश्चित किया, जो पुनर्जागरण की मूल प्रवृत्तियों से पृथक नहीं था। हिन्दू समाज और सनातन संस्कृति की उत्थान वे भी चाहते थे, किन्तु यूरोप की आधुनिक सभ्यता की उपलब्धियों को भी अपने देशवासियों तक पहुँचाना चाहते थे। वे निर्धनता का उन्मूलन तो चाहते ही थे, फलतः हरिजन उद्धार में उनकी विशेष रुचि दृष्टिगत थी। वे समय के साथ तालमेल में भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का आधुनिकीकरण भी चाहते थे। महामना भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं भारतीय समाज को तो समसामयिक काल में आधुनिक बनाना चाहते थे, परन्तु राजनीतिक आधुनिकीकरण के पक्ष में नहीं थे। महामना प्रारम्भ में अंग्रेजी शासन से देश को लाभान्वित करना चाहते थे, किन्तु बाद में उनके विचार बदल चुके थे, और वे देश की स्वतन्त्रता को प्रधानता देने लगे। कांग्रेस के मंच से, संसद के अन्दर और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के रूप में उन्होंने देश में जागृति की ऐसी लहर उत्पन्न की जिसका तार्किक परिणाम स्वाधीनता की लड़ाई और राष्ट्र के पुनर्निर्माण के रूप में फलित हुआ।

भारतीय पुनर्जागरण के जनक 'राजा राममोहन राय' पश्चिमीकरण से अत्यधिक प्रभावित थे। देश के पुनर्जागरण और सुधारवादी परिवर्तन के लिए वह राष्ट्र का पश्चिमीकरण करना सुधार का आवश्यक अंग मानते थे, उनके कार्य की विधि पश्चिमी सभ्यता की पोषक थी। लेकिन 'मालवीय जी' की यह विशेषता थी कि वह सुधार और प्रगतिशील परिवर्तन भारतीय पृष्ठभूमि में करना चाहते थे, और भारतीय संस्कृति को हर कीमत पर कायम रखना चाहते थे। **मालवीय जी** का समाज को देखने का एक विशेष चश्मा था। उनके विचार के अनुसार व्यक्ति एक 'वृक्ष' की भांति है, जिसकी शाखाएं मुक्त आकाश में स्वच्छंद होती हैं, किंतु उसका तना दृढ़तापूर्वक भूमि पर खड़ा होता है, जिसकी जड़ें भूमि से सम्पूर्ण वृक्ष के भरण–पोषण के लिए जीविकोपार्जन हेतु आहार ग्रहण करती हैं। वह वृक्ष पूर्ण रूप से उस भू–खण्ड की उर्वरा शक्ति पर निर्भर होता है। उसमें बाह्य पर्यावरण से कृत्रिम खाद–रसायन आदि दिये जा सकते हैं, किंतु उनका मूल स्रोत वह भू–खण्ड ही होता है, जहाँ वह वृक्ष उत्पन्न होता है। अतः व्यक्ति को अपनी 'पैतृक, सामाजिक, सांस्कृतिक' आदि 'मूल' आलम्ब पर दृढ़ रहते हुए समाज के प्रति वृक्ष की उन्मुक्त लहलहाती हुई शाखाओं तथा पल्लवों की भाँति होना चाहिए। **'मैक्स वेबर'** ने भी इसी प्रकार की बात की पुष्टि की है कि परम्परात्मक कार्य करने का व्यक्ति अभ्यस्त हो जाता है, उसे उस कार्य को सम्पन्न करने में किसी प्रकार की अतिरिक्त चेष्टा नहीं करनी पड़ती। ''महामना मालवीय'' के अनुसार मानव को इन संस्कृतियों और सभ्यताओं के संस्कारों को अनवरत रूप से कायम रखना चाहिए। इनका मानना था कि धर्म नित्य है, यदि प्राण भी जाता है, तब भी धर्म का त्याग यथासम्भव नहीं किया जाना चाहिए।

गाँधी और **मालवीय** के विचारों में 'आधुनिकीकरण' के सम्बन्ध में अन्तर है। 'गाँधी जी' चाहते थे कि व्यक्ति अपने को इस स्थिति में रखे कि थोड़े में निर्वाह सम्भव हो सके और उसे अभाव बोध न हो, किन्तु 'महामना' व्यक्ति का आधुनिकीकरण इस प्रकार का देना चाहते थे कि आधुनिक सुख–सुविधा प्राप्त कर लेने के बाद, व्यक्ति उसका अभ्यस्त हो जाये और उसी के अनुसार अपना जीवन स्तर आधुनिकीकृत करे। यहाँ महामना जी की विचारधारा आधुनिकीकरण और परिवर्तन की दिशा में अधिक प्रगतिशील दृष्टिगत है। गाँधी जी राष्ट्र की स्थिति के अनुसार गरीबी को स्वीकार करते हुए उसी के अनुसार रहन–सहन का स्तर नीचे ही रखने की बात करते हैं, किन्तु महामना जी आधुनिकीकरण द्वारा वह स्थिति पैदा करना चाहते हैं, जहाँ अभाव बोध महसूस करके व्यक्ति साधन प्राप्त करने का अधिक एवं सार्थक प्रयास करने में लगें। महामना मालवीयजी संस्कारों द्वारा अर्जित सभ्यता और संस्कृति के मूल के सातत्य के साथ–साथ समाज को उनकी परम्परा के आधार पर स्थिर रखने वाली मूल मान्यता 'एकता' को भंग करने वाली परम्पराओं, प्रथाओं तथा लोकाचारों आदि में युग की माँग के अनुसार क्रमशः एकता को भंग करने वाले संघर्षों से विरत रखते हुए, नवजागरण की चेतना की जागृति द्वारा समन्वयात्मक ढंग से परिवर्तन की दिशा में सार्वजनिक रूप से प्रयास करते थे। मालवीयजी की कार्य–पद्धति का यही मूल दर्शन था, जिसको उन्होंने अपने सभी सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय कार्य–क्षेत्रों में संस्थापित करने का प्रयास किया था। मालवीयजी, राजा राममोहन राय, गोखले आदि की भाँति यह चाहते थे कि देश में पुनर्जागरण द्वारा समाज और राष्ट्र के प्रति नव–चेतना का संचार होने पर ही स्वराज्य प्राप्त हो सकता है। प्रयाग में विद्यार्थियों को आवासीय असुविधा को देखकर मालवीयजी ने बिजली–पंखों से सुसज्जित एक बोर्डिंग हाउस का निर्माण कराया था। रास्ते में मालवीयजी ने उसे गाँधीजी को दिखाया। बोर्डिंग हाउस देखकर गाँधीजी मालवीयजी से कहते हैं कि ग्राम में रहने वाले गरीब भारतीय किसानों के बच्चों को इन आधुनिक सुविधाओं से युक्त भवनों में रखकर आप इनकी आदत बिगाड़ रहे हैं। भाई साहब! ये बच्चे इन सुख–सुविधाओं में रहने के बाद पुनः गाँवों में कैसे रह सकेंगे। इस पर मालवीयजी ने कहा– मैं इनकी आदतें जान–बूझ कर खराब कर रहा हूँ, ताकि आधुनिक युग के साधनों के प्रति अभाव बोध होने पर ये लोग इन आधुनिक वैज्ञानिक बिजली–पंखों आदि साधनों की व्यवस्था करें और देश का आधुनिकीकरण हो

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

सके। इस प्रकार गाँधीजी जहाँ सीमित साधनों में रहने की बात करते हैं, वहीं मालवीयजी नवीन साधनों को अपना कर देश को आधुनिक बनाना चाहते हैं, जो उनकी प्रगतिशील विचारधारा का द्योतक है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भारतीय पुनर्जागरण के जनक **राजा राममोहन राय** और **मालवीयजी** के पुनर्जागरण और परिवर्तन का कार्य क्षेत्र एक था, परन्तु मालवीयजी की कार्य–पद्धति की कुछ अपनी विशेषताएँ थीं। मालवीयजी पश्चिम के ज्ञान–विज्ञान को भारतीय संस्कृति और सभ्यता की पृष्ठभूमि में अवतीर्ण करना चाहते थे। वह हिन्दू समाज में व्याप्त रीतियों के विरोधी थे। वह समाज में व्याप्त रीतियों–कुरीतियों आदि के परिष्करण हेतु किसी प्रकार का दबाव डालकर कार्य नहीं करना चाहते थे, किन्तु वह चाहते थे कि जनजागृति पैदा करके ही जनमानस को बदला जाय। बलपूर्वक किसी भी प्रकार्यात्मक अथवा अप्राकार्यात्मक भावनाओं, विश्वासों, अभिवृत्तियों आदि के विपरीत कार्य करना वह सर्वथा अनुचित एवं पाशविक वृत्ति का द्योतक मानते थे। उन्होंने देश में व्याप्त अस्पृश्यता निवारण, बहु–विवाह प्रथा निवारण, पशु बलि निरोध, दहेज प्रथा विरोध आदि अन्यान्य क्षेत्रों में पुनर्जागरण और परिवर्तन सम्बन्धी कार्य किया था। सभी स्थानों पर उनके कार्य की विधि किसी के विचारों के हनन अथवा दबाव के विपरीत थी। मालवीयजी पुनर्जागरण और परिवर्तन के लिए सामाजिक चेतना की जागृति पैदा करना चाहते थे, परन्तु उनके कार्य का ढंग भारतीय शास्त्रीय परम्पराओं के आन्तरिक स्वरूप द्वारा निर्देशित था, जिसका औचित्य गाँधीजी भी स्वीकार करते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि मालवीयजी के कार्य करने की अपनी पद्धति थी, जिसमें पुनर्जागरणकालीन सुधारवादियों की परम्पराओं में सामाजिक परिवर्तन की अपनी विशेषतानिहित थी।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सनातन संस्कृति के उन्नायक, माँ भारती के अनन्य उपासक, विराट व्यक्तित्व के धनी, महान जननेता एवं प्रख्यात शिक्षा–शास्त्री, भारत रत्न, महामना पंडित मदन मोहन मालवीय ऐसे त्यागधारित दृढ़ पुरुष एवं युग पुरुष थे, जिन्होंने अपने जीवन को राष्ट्र और समाज के उत्थान के लिए पूर्णतः समर्पित कर दिया था। उनका व्यक्तित्व केवल राजनीतिक या शैक्षिक क्षेत्र तक सीमित नहीं था, बल्कि उसमें भारतीय सनातन संस्कृति, आध्यात्मिकता, नैतिकता और राष्ट्रीय चेतना का अद्भुत समन्वय विद्यमान था। ब्रिटिश शासन–काल में प्रचलित दोषपूर्ण पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली, जो भारतीय मूल्यों एवं परंपराओं से पूर्णतः विमुख थी, महामना को अत्यन्त व्यथित करती थी। उनका मानना था कि पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली, जो भारतीय मूल्यों एवं परंपराओं से पूर्णतः विमुख थी, अपनी गौरवशाली और समृद्ध संस्कृति की जड़ों से काट देगी। अतः महामना ने प्राचीन भारतीय गुरुकुल की समृद्ध शिक्षा व्यवस्था से प्रेरित होकर एक ऐसी भारतीय शिक्षा व्यवस्था की परिकल्पना की, जो आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के साथ–साथ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिक आदर्शों और आध्यात्मिक चेतना को भी समान महत्व दे। इस महान संकल्प के साथ उन्होंने राष्ट्र के नवनिर्माण का प्रण लिया। एक ऐसा राष्ट्र, जिसकी नींव अपनी समृद्ध परम्परा, संस्कृति और चरित्रबल पर आधारित हो। इस प्रकार के सामाजिक पर्यावरण के निर्माण के माध्यम से महामना ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को एक ऐसे भौगोलिक विस्तार में स्थापित किया, जो आज भी भारतीय शिक्षा पद्धति में वाराणसी को एक राजधानी के स्वरूप में प्रस्तुत करता दिखता है, एवं भारत में ही नहीं बल्कि एशिया महाद्वीप में सर्वोच्च स्थान बनाये रखने में सफल है। महामना का यह संकल्प केवल विचार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने इसे कर्म में परिणत किया। तीर्थराज प्रयाग की पावन धरती पर पौष कृष्ण अष्टमी, 25 दिसम्बर 1861 को जन्मे इस महान् विभूति ने ज्ञान, अध्यात्म और सनातन धर्म की राजधानी काशी में वर्ष 1916 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के माध्यम से एक ऐसे शैक्षणिक परिवेश को विकसित करने का आवाहन किया, जो आज एशिया महाद्वीप में ज्ञान–विज्ञान एवं शैक्षणिक क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका में संचालित है। यह विश्वविद्यालय केवल एक शैक्षणिक संस्थान ही नहीं है, बल्कि महामना के उस महान् स्वप्न का मूर्त रूप है, जिसमें उत्कृष्ट सामाजिक, शैक्षणिक वातावरण के साथ ही शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का आधार माना गया। यहाँ आधुनिक ज्ञान–विज्ञान, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी के साथ–साथ भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों, नैतिक आदर्शों और आध्यात्मिक चेतना, धर्म और चरित्र निर्माण को भी समान महत्व देते हुए शिक्षा का अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार किया गया। इस महान संकल्प के साथ महामना ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर उसे राष्ट्र के समग्र उत्थान और व्यक्तित्व निर्माण का सशक्त एवं सफल साधन के रूप में अग्रसारण किया।

वर्ष 1916 से पूर्व ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत पाश्चात्य शिक्षा पद्धति के आधार पर वर्ष 1857 में कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, 1882 में लाहौर तथा 1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हो चुकी थी, लेकिन महान् राष्ट्रभक्त महामना ब्रिटिश शासन तंत्र के दबाव से मुक्त, प्राचीन भारतीय शिक्षा के गौरवशाली मंदिर 'तक्षशिला' एवं 'नालंदा' एवं शान्ति निकेतन की तर्ज पर एक ऐसे राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करना चाहते थे, जो भारतीय आत्मा को प्रतिबिम्बित कर सके। ऐसा विश्वविद्यालय जहाँ छात्र–छात्राएं सनातन संस्कृति के मूल्यों को आत्मसात् कर सकें, प्राचीन भारत की समृद्ध ज्ञान सम्पदा के साथ–साथ आधुनिक ज्ञान–विज्ञान का अध्ययन कर सकें। ज्ञान और कौशल सशक्तीकरण के अतिरिक्त जहाँ धर्म और नीति को शिक्षा का अभिन्न अंग मानकर छात्रों का चरित्र निर्माण हो सके। अपने इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर महामना ने विश्वविद्यालय की स्थापना संबंधी योजना को सर्वप्रथम 1904 में बनारस के नदेसर स्थित मिन्ट हाउस में काशी नरेश महाराजा प्रभु नारायण सिंह की अध्यक्षता वाली बैठक में रखा और सभी की स्वीकृति प्राप्त की। फिर उन्होंने 31 दिसम्बर 1905 को टाउनहाल की सभा में तथा जनवरी 1906 में प्रयाग की सनातन धर्म महासभा में इस प्रस्ताव का अनुमोदन प्राप्त किया। दिसम्बर 1911 में महाराजा दरभंगा नरेश की अध्यक्षता में हिन्दू विश्वविद्यालय सोसायटी की स्थापना हुई और 1915 में हिन्दू विश्वविद्यालय एक्ट पारित हुआ तथा विश्वविद्यालय को कानूनी मान्यता मिली। महाराजा प्रभु नारायण सिंह जी द्वारा स्वीकृत भूखण्ड आवंटित किया गया और 04 फरवरी 1916 को गंगा के तट के समीप तत्कालीन गर्वनर जनरल लॉर्ड हार्डिंग द्वारा विश्वविद्यालय का शिलान्यास हुआ। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय महामना के चिन्तन, सनातन संस्कृति के प्रति उनकी प्रगाढ़ निष्ठा, उनके स्वप्न, राष्ट्रप्रेम, अदम्य साहस और शक्ति के साथ–साथ सहयोग, दान एवं दृढ़ इच्छा शक्ति का आज भी जीवित स्वरूप दृष्टिगत है। महामना ने इस विश्वविद्यालय को बाबा विश्वनाथ के प्रसाद स्वरूप हिन्दू संस्कृति के ध्वजवाहक के रूप में एक निश्चित भौगोलिक परिक्षेत्र में शैक्षणिक पर्यावरण के साथ परिकल्पित किया, जो आज दो भौगोलिक परिक्षेत्र वाराणसी एवं मिर्जापुर (बरकछा) के रूप में पुष्पित एवं पल्लवित होता दीख रहा है। इस विश्वविद्यालय की महानता और पवित्रता बाबा विश्वनाथ के स्मरण/नतमस्तकता के साथ शुरू होता है, एवं रात्रि आरती के साथ अगले दिन की प्रतीक्षा करता हुआ उदित होता है। महामना ने स्वयं ही इस के संदर्भ में लिखा है कि–**"प्रसादात् विश्वनाथस्य काश्यां भागीरथी तटे विश्वविद्यालये। श्रेष्ठो यं ह्यिन्दूनांम मानवर्धनाम्:"** जो आज भी विश्वविद्यालय के केन्द्र में स्थित विश्वनाथ मंदिर के मुख्य द्वार की शिला पर उल्लेखित है।

महामना राष्ट्र–ऋषि थे, जिन्होंने आचार्य चाणक्य की नीति शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण और सामाजिक पुनरुत्थान का संकल्प लिया। महामना का मत था कि शिक्षा के माध्यम से ही छात्रों में चरित्र निर्माण, देशभक्ति, मातृभूमि के प्रति समर्पण,

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

सांस्कृतिक विरासत और धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा की भावना का विकास संभव है। सनातन संस्कृति को विश्व की श्रेष्ठतम संस्कृति मानने वाले महामना छात्र में **'सेवा भाव के विकास'** हेतु सनातन धर्म की शिक्षा को आवश्यक मानते थे। शिक्षा के माध्यम से वे मानव निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण के सदा पक्षधर रहे। महामना राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्र निष्ठा को सर्वोत्तम शक्ति मानते थे, जिससे मनुष्य को उच्च कोटि की निःस्वार्थ सेवा करने के लिए और आत्म त्याग के लिए प्रेरणा मिलती है। आध्यात्मिक विकास के लिए वे ईश्वर में विश्वास, भक्ति और मानव सेवा को आवश्यक मानते थे। उनका मत था कि–

परख सबको करें, ग्रहण शुभ की करें– "**आप अपने को सौभाग्यशाली समझें, कि कोई आपको सेवा करने का अवसर प्रदान कर रहा है।**"

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के समय महामना ने विश्वविद्यालय के चार प्रमुख उद्देश्य निर्धारित किये, जिसमें से एक उद्देश्य था कि– **"धर्म और नीति को शिक्षा का अभिन्न अंग मानते हुए, उनके माध्यम से युवाओं में सुदृढ़ चरित्र का निर्माण करना।**" महामना का स्पष्ट मत था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करना या व्यावसायिक दक्षता हासिल करना नहीं है, बल्कि उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है, मनुष्य के भीतर नैतिकता, आत्मानुशासन, कर्तव्यपरायणता, उच्च चरित्र का निर्माण और आध्यात्मिक चेतना का विकास करना। इस प्रकार महामना भारत के ऐसे मनीषी थे, जिन्होंने शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न रखकर उसे धर्म, नीति और जीवन मूल्यों के साथ समन्वित किया। उनके अनुसार– **यदि शिक्षा व्यक्ति के चरित्र को परिष्कृत नहीं करती, तो वह अधूरी और अप्रभावी है।** इसी व्यापक और गहन दृष्टिकोण को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने विश्वविद्यालय की स्वयं निर्मित विवरणिका के मुखपृष्ठ पर **महर्षि कणाद** द्वारा रचित धर्म परिभाषित करने वाले प्रसिद्ध सूत्र को अंकित कराया– **"यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः।**" जिसका अभिप्राय है कि वह आचरण, कर्तव्य या जीवन–पद्धति ही धर्म है, जिसके पालन से मनुष्य को लौकिक जीवन में उन्नति, समृद्धि और सफलता प्राप्त हो, तथा पारलौकिक जीवन में आत्मिक शान्ति, मोक्ष एवं परम कल्याण की सिद्धि हो। इस प्रकार महामना द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय केवल विद्या प्राप्ति का केंद्र ही नहीं अपितु संस्कार, चरित्र और आदर्श जीवन मूल्यों के निर्माण का एक प्रेरणास्थल भी है।

महामना के रोम–रोम में राष्ट्रभक्ति का भाव था। स्वयं एक बार **गांधीजी** ने कहा था कि– **'मैं मालवीय जी की राष्ट्रभक्ति की पूजा करता हूँ।**' महामना भारतीय ज्ञान परंपरा और समृद्ध भारतीय संस्कृति के आलोक में छात्रों को कला, विज्ञान, तकनीक से बंधी शिक्षा दिये जाने के पक्षधर थे, जिससे छात्र ज्ञान–विज्ञान के विविध आयामों में दक्षता हासिल करने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति में निहित मूल्यों एवं सुविचारों को अंतर्लीन करते हुए, धार्मिक और चरित्रवान बनकर, एक सुयोग्य राष्ट्रभक्त बनकर देश के विकास में सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर सकें। महामना कहते थे कि इस धरती पर जो वस्तु मुझे सबसे अधिक प्यारी है, वह धर्म है, वह सनातन धर्म है। महामना नित्य गीता का पाठ किया करते थे। उनके द्वारा विश्वविद्यालय में प्रारम्भ की गई गीता–प्रवचन की परम्परा आज भी निर्बाध स्वरूप में जारी है।

जब सन् 1914 में तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने हरिद्वार में माँ गंगा के अविरल प्रवाह को बाँध द्वारा अवरुद्ध कर कृत्रिम और नियंत्रित धारा को हर की पौड़ी में प्रवाहित करने की कोशिश की तो महामना ने लाखों गंगा भक्तों को साथ लेकर ऐसा जनान्दोलन किया कि सरकार को घुटने टेकने पड़े। यह महामना की गंगा भक्ति की भावना की अद्भुत मिशाल थी। इसी भावना से ओत–प्रोत महामना ने वर्ष 1916 में हरिद्वार में श्री गंगा सभा की स्थापना की और उन्हीं के द्वारा हर की पौड़ी में आरम्भ कराई गई गंगा आरती आज भी निर्बाध रूप से जारी है। तत्कालीन भारतीय समाज में समरसता और एकजुटता लाने हेतु महामना ने काशी के दशाश्वमेध घाट पर, कलकत्ता में हावड़ा पुल के पास, नासिक के गोदावरी तट पर अछूतोद्धार के कार्यक्रम चलाये और स्वयं मंत्र–दीक्षा देते रहे। यह महामना का व्यक्तित्व था, जिन्होंने अपने समय में "गौ–रक्षा" और "स्त्री–शिक्षा" को देशव्यापी जनान्दोलन का रूप दे डाला। वे गंगा, गऊ और गायत्री को सनातन संस्कृति के प्रतीक मानते थे।

महामना राष्ट्रीयता के विकास के लिए मातृभाषा के उन्नयन और अधिकाधिक प्रयोग को आवश्यक मानते थे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने हेतु महामना ने जीवनपर्यन्त संघर्ष किया। उनका मानना था कि हमारे मौलिक चिन्तन अभिव्यक्ति मातृभाषा में ही सम्भव है। वे चाहते थे कि शिक्षण संस्थानों में अध्ययन–अध्यापन की भाषा हिंदी और भारतीय भाषाएँ हों, लेकिन तत्कालीन सरकार के दुराग्रह से यह सम्भव नहीं हो सका। महामना के सतत प्रयासों से ही 14 अप्रैल 1900 को तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर सर एंटोनी मैकडोनल ने हिन्दी को न्यायालय की भाषा के रूप में स्वीकार किया। इसके लिए महामना ने 60 हजार लोगों द्वारा हस्ताक्षरित प्रतिवेदन सौंपा था। वर्ष 1910 में महामना के नेतृत्व में प्रयाग में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना हुई। वर्ष 1922 में महामना द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर में पठन–पाठन हेतु एक स्वतंत्र हिन्दी विभाग की स्थापना हुई।

महामना अनूठे राष्ट्रभक्त थे, जिनके दिल में आजादी के हर दीवाने के लिए अगाध प्रेम था। वे 1919 रौलेट बिल के विरोध में लगभग 06 घंटे तक सदन में बोलते रहे। अप्रैल 12, 1919 को बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियांवाला बाग में जनरल डायर के नेतृत्व में 1650 राउंड गोलियाँ चलीं और भीषण नरसंहार हुआ, जिसमें 42 बच्चों समेत 1000 लोग मारे गए और 2000 लोग घायल हुए। महामना इस घटना से व्यथित हो उठे और घटना के तुरंत बाद वे स्वयं अमृतसर गये। घटनास्थल पर हृदयविदारक दृश्य देखकर उनकी आँखों से आँसुओं की धार निकल पड़ी। कई दिनों तक महामना अकेले प्रत्येक पीड़ित परिवार के लोगों से मिलते रहे, गाँवों में घर–घर जाकर उन्होंने सर्वे किया, प्रत्यक्षदर्शियों के बयान दर्ज किये तथा घटना संबंधी तथ्यों को एकत्र किये। सितम्बर 1919 में इस नरसंहार के विरोध में उन्होंने लेजिस्लेटिव काउंसिल में अंग्रेजी हुकूमत से 93 प्रश्न पूछे तथा लगातार तीन दिन तक अपनी प्रखर वाणी से ऐसा प्रहार करते रहे, जिसकी गूंज ब्रिटेन तक गई। तत्कालीन ब्रिटेन के विदेश युद्ध सचिव विंस्टन चर्चिल तथा पूर्व प्रधानमंत्री हेनरी रक्वीथ ने 08 जुलाई 1920 को ब्रिटिश संसद में कड़े शब्दों में इस नरसंहार की भर्त्सना की।

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए मर मिटने वाले क्रान्तिकारी युवाओं के लिए महामना सदा एक बड़े हमदर्द और प्रेरणा–स्रोत रहे। वर्ष 1922 में चौरी–चौरा कांड हुआ, जिसमें आजादी के दीवाने क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान पुलिस थाने में आग लगा दी, जिससे 22 पुलिसकर्मियों की मृत्यु हो गई। गांधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया गया। गोरखपुर सत्र न्यायालय द्वारा 172 क्रान्तिकारियों को फाँसी की सजा सुना दी गई। उस समय देश में एक से बढ़कर एक ख्यातिलब्ध वकील थे, लेकिन जेल में बन्द क्रान्तिकारियों के मित्र महामना के पास आये और उन्होंने महामना से मुकदमें की पैरवी करने का अनुरोध किया। लेकिन वे महामना ही थे, जो वर्ष 1922 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति रहते हुए तथा 12 वर्ष पूर्व वकालत छोड़ चुके थे, युवा क्रान्तिकारियों के समर्थन में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए आगे आये और प्रयाग उच्च

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

न्यायालय में आरोपियों की तरफ से बिना कोई फीस लिए डबल बेंच के सम्मुख सरकार के विरुद्ध मुकदमा लड़े। ऐसा साहसिक कदम तत्कालीन नेताओं में केवल महामना जी ही उठा सकते थे। महामना के अधिवक्ता के रूप में क्रान्तिकारी वीरों के समर्थन में, न्यायालय में ऐतिहासिक और राष्ट्रभक्ति से सराबोर तर्क प्रस्तुत किये, जिससे 153 अभियुक्त पूर्ण रूप से बरी हो गये। अपने ओजस्वी और तर्कपूर्ण बहस की धार से महामना ने मुकदमें की सुनवाई कर रहे मुख्य न्यायाधीश सर ग्रिनवुड पीयर्स और न्यायमूर्ति पोगट को ऐसा प्रभावित किया कि उन दोनों ने कई बार खड़े होकर महामना का सिर झुकाकर अभिवादन किया। भारतीय न्याय प्रक्रिया के इतिहास में सम्भवतः यह अपने तरह की अकेली घटना रही होगी।

सनातन संस्कृति के संवर्धन एवं उन्नयन में महामना ने अप्रतिम योगदान दिया। द्वितीय गोल मेज सम्मेलन, लन्दन में महामना ने सन् 1931 में महात्मा गाँधी एवं बाबा साहब अम्बेडकर के साथ भाग लिया था, एवं अपने वक्तव्य से गौरवशाली भारतीय संस्कृति के मूल आदर्शों को अंग्रेजों के समक्ष विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया। जब सम्मेलन के अध्यक्ष ने महामना से भारतीय संस्कृति के सार के बारे में जानना चाहा तो महामना ने उत्तर दिया– **"गंगा, गैया, गीता ज्ञान हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान"**। महामना ने प्रयाग में 1885 में 'मध्य हिन्दू समाज', 1887 में 'भारत धर्म मण्डल' और 1906 में एवं 'अखिल भारतीय सनातन धर्म महासभा' की स्थापना की थी। महामना के नेतृत्व में वर्ष 1915 में प्रयाग में अखिल भारतीय हिन्दू महासभा की स्थापना हुई। उन्होंने काशी के कई घाटों का जीर्णोद्धार कराया साथ ही साथ 1931 में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भव्य काशी विश्वनाथ मंदिर की आधारशिला रखवाई।

महामना ने **एक पत्रकार के रूप में अपनी जीवन यात्रा** का आरम्भ वर्ष 1887 में अध्यापक के पद से त्याग–पत्र देकर 'हिन्दुस्तान' समाचार पत्र के सम्पादक के रूप में किया। प्रयाग से 1907 में साप्ताहिक पत्र **'अभ्युदय'**, वर्ष 1909 में अंग्रेजी दैनिक पत्र 'लीडर' तथा 1910 में हिन्दी पत्रिका 'मर्यादा' का प्रकाशन आरम्भ कराया। अपने पत्र–पत्रिकाओं में महामना राष्ट्रभक्ति को जीवन का ध्येय मानकर अपने दार्शनिक एवं वैचारिक चिन्तन के द्वारा तत्कालीन समाज में राष्ट्रीय जागरण के लिए सदा प्रयत्नशील रहे। अपने सम्पादकीय लेखन से उन्होंने अंग्रेजी शासन की दमनकारी नीतियों का पुरजोर विरोध किया। काशी में 1933 में उन्होंने साप्ताहिक पत्र **'सनातन धर्म'** का प्रकाशन किया। वे अंग्रेजी दैनिक **'हिन्दुस्तान टाइम्स'** के 23वें वर्ष तक अध्यक्ष रहे। महामना के लिए पत्रकारिता जनमानस में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जनमत तैयार करने एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति का एक माध्यम था।

आज देश को स्वतन्त्रता प्राप्त किये लगभग अठहत्तर वर्ष बीत चुके हैं। भारत रत्न महामना आज हमारे बीच नहीं हैं, तथापि ब्रिटिश शासनकाल में उनके द्वारा शिक्षा के माध्यम से सनातन संस्कृति की सुदृढ़ नींव पर राष्ट्रनिर्माण का जो महान् संकल्प लिया गया था, वह आज भी हमें निरंतर प्रेरणा देता है कि हमारे लिए राष्ट्रहित और राष्ट्रभक्ति सर्वोपरि है। महामना की शिक्षा दृष्टि को केन्द्र में रखकर हमें शिक्षा के मूलभूत उद्देश्यों जैसे युवा–युवतियों में ज्ञान, कौशल और उद्यमिता विकास के साथ–साथ सनातन सांस्कृतिक मूल्यों के आलोक में उनका सर्वांगीण विकास, चरित्र निर्माण, मातृभाषा और मातृभूमि के प्रति उनके समर्पण भाव को मजबूती प्रदान करना होगा, ताकि वे गौरवशाली भारतीय संस्कृति के मूल्यों को आत्मसात् करते हुए, वैश्विक नागरिक बनकर समर्थ और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अग्रणी भूमिका का निर्वाह कर सकें।

भारत के राष्ट्रवादियों में धार्मिक और सामाजिक सुधारक, राजनीतिक आन्दोलनकारी, कवि, सन्त तथा प्रशासकीय व्यक्ति थे। वे अंग्रेजों और भारतीयों दोनों से सहानुभूति रखते थे। कुछ लोगों के पास समाज को बदलने के कार्यक्रम थे, तो कुछ लोगों के पास केवल अपने चारों ओर की परिस्थितियों और क्रियाकलापों की आलोचना थी। साथ ही कुछ दूसरे थे, जो भारत के उसी स्वरूप को जानते थे जो धार्मिक श्रद्धा के प्रतीक रूप में हमारे सामने आता है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म भी स्थानीय रूप में राजनीतिक क्रिया–कलापों से हो चुका था। स्पष्ट है कि आधुनिक भारतीय राष्ट्र की प्रकृति का निर्माण पुनर्जागरण द्वारा होता है। ब्रिटिश शासन के सम्पर्क से नयी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक शक्तियों का जन्म होता है। भारतीय समाज की धार्मिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों के प्रयोग के द्वारा समाज के मूलभूत घटक नयी राजनीतिक एवं आर्थिक विकास में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इसका परिणाम जीवन के व्यापक परिवेश में होता है। चूँकि पुनर्जागरण एवं राष्ट्रवादी धाराओं का मूल ब्रिटिश शासन से जुड़ा है, इसलिए ब्रिटिश शासन जहाँ, जिस क्रम एवं प्रक्रिया से पहुँचता है, राष्ट्रवाद उसी क्रम से विकसित होता है। फलतः क्षेत्रीय राष्ट्रवाद की पहचान भी अत्यन्त स्पष्ट है जो अन्ततः अखिल भारतीय राष्ट्रवाद का संघात्मक पक्ष प्रस्तुत करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. M. N. Srinivas : Social Change in Modern India, P. 1, Orient Longman, Bombay (1972).
2. D. Lerner : The Passing of Traditional Society, pp. 45-49, Glencoe III (1958).
3. Marion J. Levy : Modernization and Structure of Societies, pp. 35-36, New Jersey Vol. I, (1966).
4. S. C. Dube : Modernization and its Adaptive Demonds on Indian Society, Published article, 'The Sociology of Education in India (ed.), P. 34 by M. S. Gore and others-National Council of Educational Research and Training, New Delhi (1967).
5. Encyclopaedia of Social Sciences, P. 281, Vol. XIII, The Macmillan Co., United State (1934).
6. Social Change in Modern India, op. cit, p. 81.
7. D. Kumar, : Caste and Landlessness in South India in Comparative Studies in Society and History, P. 337, Vol. IV, No. 3, April 1962.
8. Yogendra Singh : Modernization of Indian Tradition (A Systematic Study of Social Change), P. 1, Thomson Press, India Limited, Publication Division, Delhi, 1973.
9. Social Change in Modern India, op. cit., P. 48.
10. P. Spear : The Twilight of the Mughals, P. 292, Cambridge, England (1951), See note 56.

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

11. The Honourable Pt. Madan Mohan Malviya Life and Speaches, P. 457, Madras, 2nd edition, 1908.
12. महात्मा गांधी की वर्ण व्यवस्था, पृ0 151, अनु0 श्री रामनारायण चौधरी, प्रकाशकः नव भवन, नवीन प्रकाशन, अहमदावाद (1948)।
13. Proceeding : Council of Governor General (Legislative), 1911, Vol. 49, pp. 468-469.
14. महामना मदनमोहन मालवीय : जीवन और नेतृत्व, पृ0 215।
15. 22 जुलाई 1935 ई0, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के दीक्षान्त भाषण से उद्धृत।
16. A.R. Desai : Social Background of Indian Nationalism, P. 7.
17. D. R. Gadgil : The Industrial Evolution of India in Recent Times, 1933 pp. 10-12.
18. Basil Mathews quoted in O'Malley : (ed) Modern India and the West (1941), P. 248.
19. Syed Nurullah and J. P. Naik : History of Education in India, 1943, P. 92.
20. The English Works of Raja Ram Mohan Roy, Vol. 3, P. 327.
21. Annie Besant : The Future of Indian Politics; pp. 314-15.
22. Malley. E. Thompson anb G. Garratt . Rise and Fulfillment of British Rule in India (1935), P. 76.
23. M. A. Buch : Rise and Growth of Indian Militant Nationalism, (1940) P. 28.
24. V. P. Verma : Modern Indian Political Thought, (Hindi Ver.) P. 38, quoted from Har Bilash Sharda : Life of Dayananda Saraswati.
25. H. H. Dodwell : History of British, India, 1959, to 1918, pp. 262-53.
26. R. C. Mazumdar : The Sepoy Mutiny and Revolt of 1857, Calcutta, 1957, P. 6.
27. C.Y. Chintamani : Indian Social Reformm, Part II, Madras, Themson & Co., 1901, pp. 127-28.
28. Shankar Ghose : The Renaissance to Militant Nationalism in In dia P. 246.
29. J. C. Bagale : Work on Jatiyeter Nabamantra or the History of the Hindu Mela, Calcutta, 1945, P. 74.
30. S. N. Banerjea : A Nation in Making (London) 1925, P. 7.
31. Hari Das and Uma Mookerji : Growth of Nationalism in India, P. 41.

*****